होकर सामने आए। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के चलते ही दो राष्ट्र में बंटा जर्मनी एकजुट हो गया, वहीं जबरन कई राष्ट्रों को मिलाकर बना सोवियत संघ टूट गया। इस अवसर पर जज़्मू-कश्मीर के उपमुज़्यमंत्री श्री निर्मल सिंह ने कहा कि राष्ट्रवाद की परिभाषा को समझने के लिए इस पर व्यापक बहस होनी चाहिए। जिससे लोगों को पता चल सके कि सही राष्ट्रवाद ज़्या है? उन्होंने कहा कि पूजा पद्धति पर राष्ट्र निर्माण नहीं हो सकता। भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही वास्तविकता है और यह ही भारत को मजबूती दिए हुए है। एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डा. महेशचंद्र शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर लिखे अपने अनुभवों को साझा किया। इस अवसर पर श्री दत्ताजी ने दीनदयाल सज़्पूर्ण वांग्यमय का विमोचन किया। पंडितजी के जीवन पर बना वृत्तचित्र दिखाया गया।